विषय प्रवेश

भारतीय शिक्षा का बीजारोपण सुदूर अतीत में आज से लगभग 4000 वर्ष पूर्व हो चुका था। किन्तु उसके सुसम्बद्ध स्वरूप के दर्शन वैदिक काल के प्रारम्भ में होता है।

इस काल में शिक्षा पर ब्राम्हणों का आधिपत्थ था। अतः कुछ लेखकों ने वैदिक कालीन शिक्षा को 'ब्राम्हणीय शिक्षा' तथा कुछ ने 'हिन्दू शिक्षा' की संज्ञा दी है।

शिक्षा के उद्देश्य

अल्तेकर के अनुसार वैदिक शिक्षा के उददेश्य थे–

- ईश्वर भक्ति व धार्मिकता का समावेश
- चिन्त वृतियों का निरोध
- चरित्र का निर्माण
- व्यक्तित्व का विकास
- नागारिक व सामाजिक कर्तव्य पालन के भावना का समावेश
- सामाजिक कुशलता की उन्नति
- राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण व प्रसार

शिक्षा की व्यवस्था

प्राचीन भारत में शिक्षा के दो स्तर थे –

प्राथमिक शिक्षा **उच्च शिक्षा**

प्राथमिक शिक्षा–

प्राथमिक शिक्षा का प्रारम्भ 5 वर्ष की आयु में 'विद्यारम्भ संस्कार' से होता था, जो सभी वर्णो के बालकों के लिए अनिवार्य थी।

इस स्तर पर शिक्षा का पाठयक्रम में था–

- वैदिक मंत्रो का उच्चारण व स्मरण।
- पढना –लिखना।
- भाषा व साहित्य
- व्याकरण

उच्च शिक्षा–

उच्च शिक्षा हेतु बालक गुरूकुलों में जाते थे, वहाँ इनका प्रवेश उपनयन संस्कार के पश्चात होता था।

प्रवेश व अवधि– उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार केवल ब्राम्हण, क्षत्रिय व वैश्यों के बालको का था, सामान्य रूप से इनका प्रवेश 8, 11 व 12 बर्ष की आयु में होता था।

साहित्य व धर्मशास्त्र के अध्ययन की अवधि 10 बर्ष तथा एक वेद के अध्ययन की अवधि 12 वर्ष थी।

पाठ्यक्रम – वैदिक कालीन शिक्षा का पाठयक्रम उसकी प्रकृति के अनुसार दो भागों में विभाजित थी–

अपरा (लौकिक) पाठ्यचर्या

- ❖ इतिहास
- ❖ भूगर्भशास्त्र
- ❖ आयुविज्ञान
- ❖ तर्कशास्त्र
- ❖ नीतिशास्त्र
- ❖ सैनिक शिक्षा आदि

परा (आध्यात्मिक) पाठ्यचर्या

- ❖ वैदिक साहित्य (वेद, वेदांग, उपनिषद)
- ❖ इन्द्रिय निग्रह
- ❖ यज्ञादि
- ❖ सन्ध्यावन्दन
- ❖ धर्मशास्त्र

शिक्षण विधियाँ

प्राचीन काल की शिक्षण विधियाँ प्रायः मौखिक ही थी, जिनमें प्रमुख निम्नलिखित थी–

- अनुकरण एवं आवृति विधि
- व्याख्या एवं दृष्टान्त
- कथन एवं प्रदर्शन
- श्रवण, मनन, निदिध्यासन
- तर्क विधि इत्यादि

प्राचीन कालीन शिक्षा का माध्यम संस्कृत थी ।

गुरू शिष्य सम्बन्ध

प्राचीन भारतीय शिक्षा की संभवतः सर्वश्रेष्ठ विशेषता गुरू–शिष्य संवध की थी जो बहुत ही मधुर होता था। गुरू शिष्यों को पुत्रवत मानते थे और शिष्य गुरूओं को पिता तुल्य।

गुरू

अति विद्वान, स्वाध्याथी धर्मपरायण, सच्चरित्र एवं संयमी व्यक्ति ही गुरू हो सकते थे, उस समय उन्हे समाज में सर्वोच्च स्थान प्राप्त था।

शिष्य

वैदिक काल मे उन्ही बालकों को गुरूकुल में प्रवेश दिया जाता था जो आविवाहित होते थे, उन्हे ब्रह्मचारी कहा जाता था सात्विक भोजन करते थे, सादा वस्त्र पहनते थे, व्यसनो से दूर रहते थे, गुरूकुल के नियमों का पालन व गुरू सेवा उनका परम कर्तव्य था।

शिक्षण संस्थाएं

वैदिक काल में प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था परिवारों में की जाती थी, जबकि उच्च की व्यवस्था मुख्य रूप से गुरूकुलों में।

गुरूकुल –

प्रारम्भिक वैदिक काल में गुरूकुल जन को लाहल से दुर प्रकृति के सुरम्भ गोद में किसी नदी या झरने के किनारे स्थित होते थे, परन्तु उत्तरवैदिक काल में बड़े बड़े गावों व तीर्थस्थानों के निकट स्थापित होने लगे।

वैदिक काल में अनेक प्रकार के गुरूकुल होने का उल्लेख मिलता है।

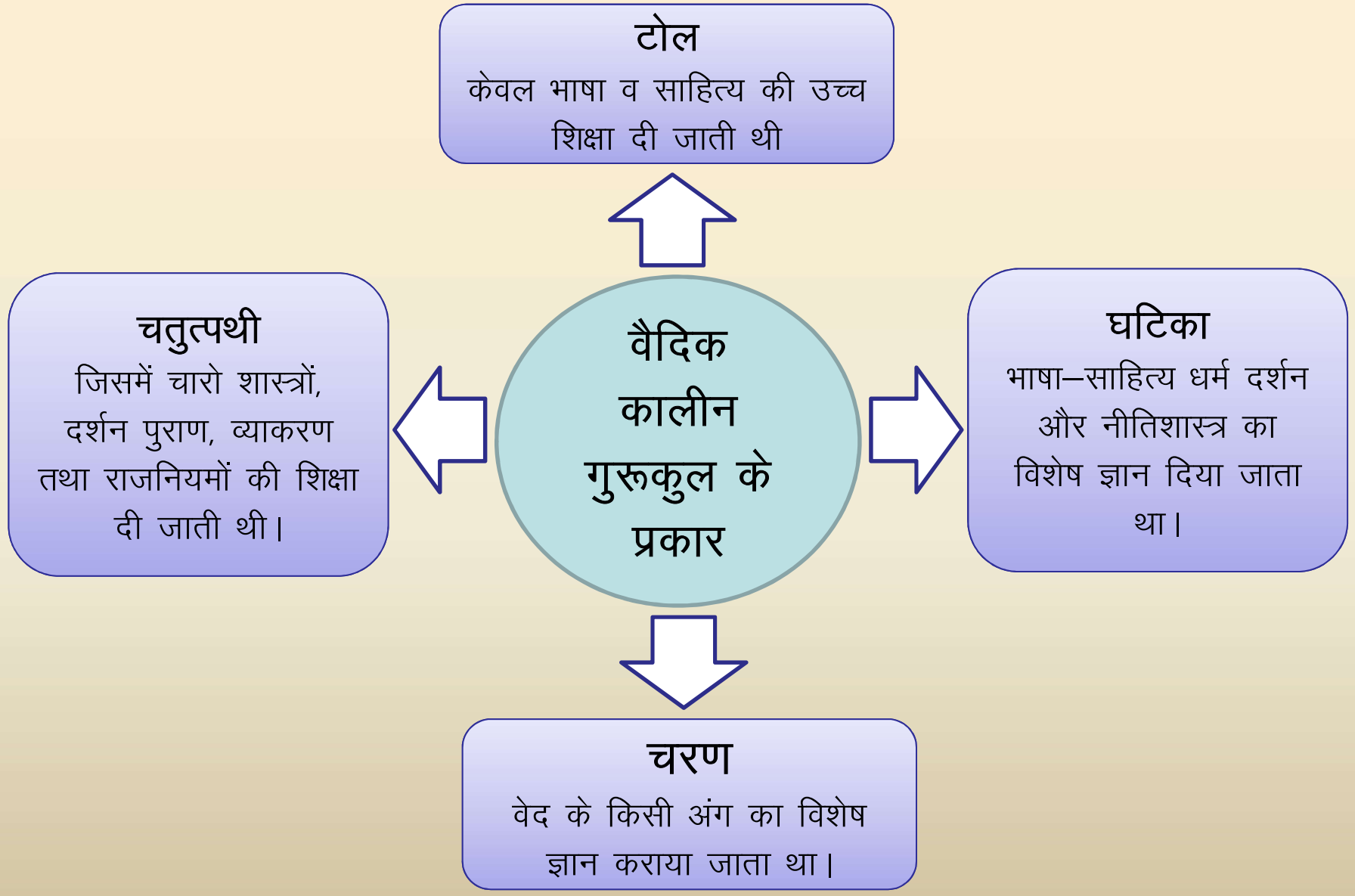

परीक्षायें व उपाधियाँ

शिष्य को विद्वानो की सभा में उपस्थित होना पड़ता था, विद्वान छात्रों से प्रश्न पूछते थे, सन्तुष्ट होने पर सफल धोषित किया जाता था।

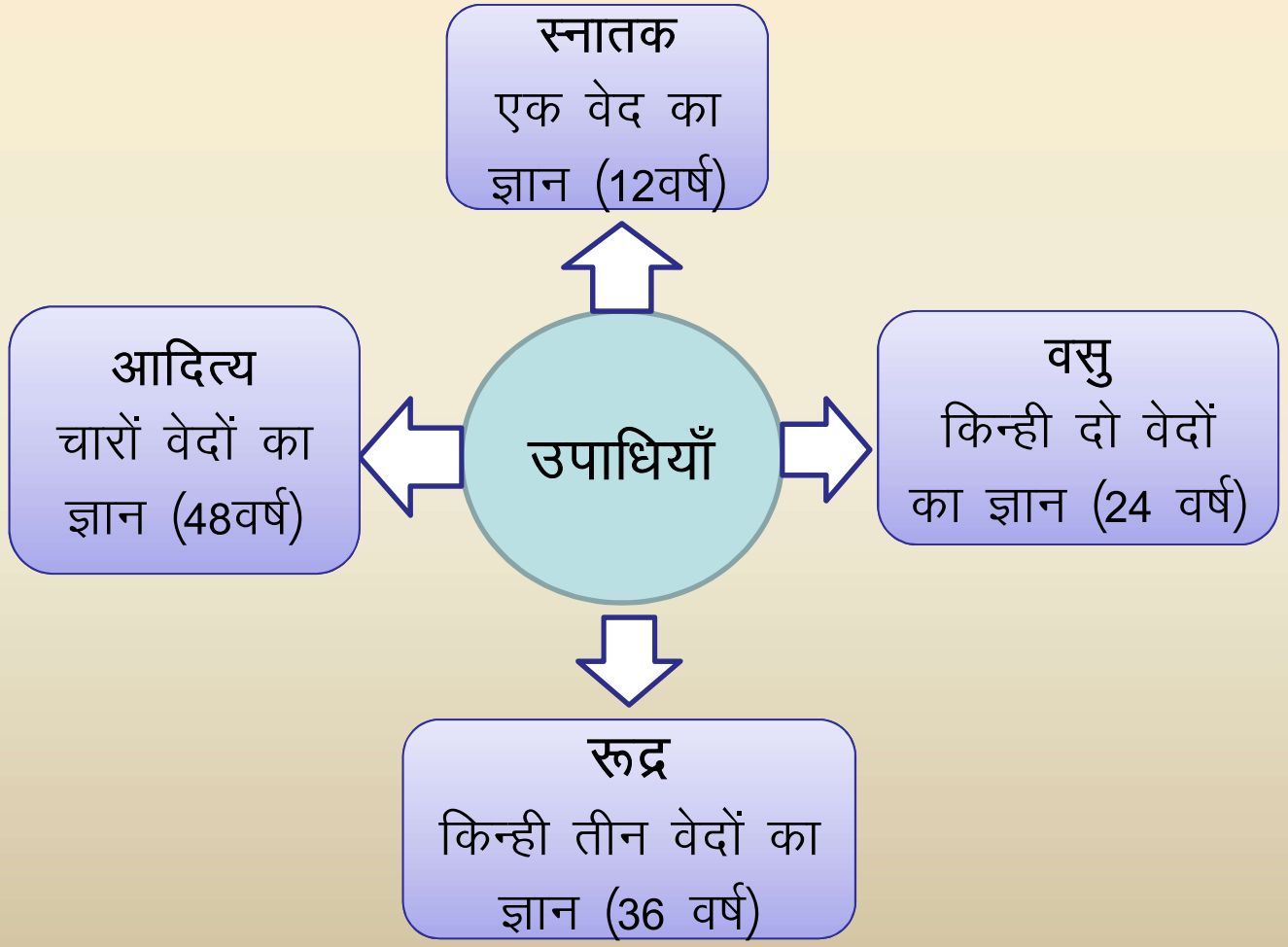

वैदिक कालीन शिक्षा में संस्कार

विद्यारम्भ संस्कार

5वर्ष की आयु मे शुभ दिन पर पुरोहित द्वारा यह संस्कार होता था तत्पश्चात बालक को शिक्षा नियमित रूप से प्रारम्भ होती थी।

समावर्तन संस्कार

जब छात्र वैदिक शिक्षा समाप्त कर गृह को लौटता था यह 25 वर्ष की आयु में होता था। छात्र व्रह्मचर्य आश्रम से गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करता था।

प्रमुख संस्कार

उपनयन संस्कार

गुरूकुल मे प्रवेश के समय होता था। यह भिन्न भिन्न आयु में होता था जो ब्राम्हण क्षत्रिय तथा वैश्यो के लिए क्रमशः 8,10,व 12 वर्ष थी

वैदिक कालीन प्रमुख शिक्षा केन्द

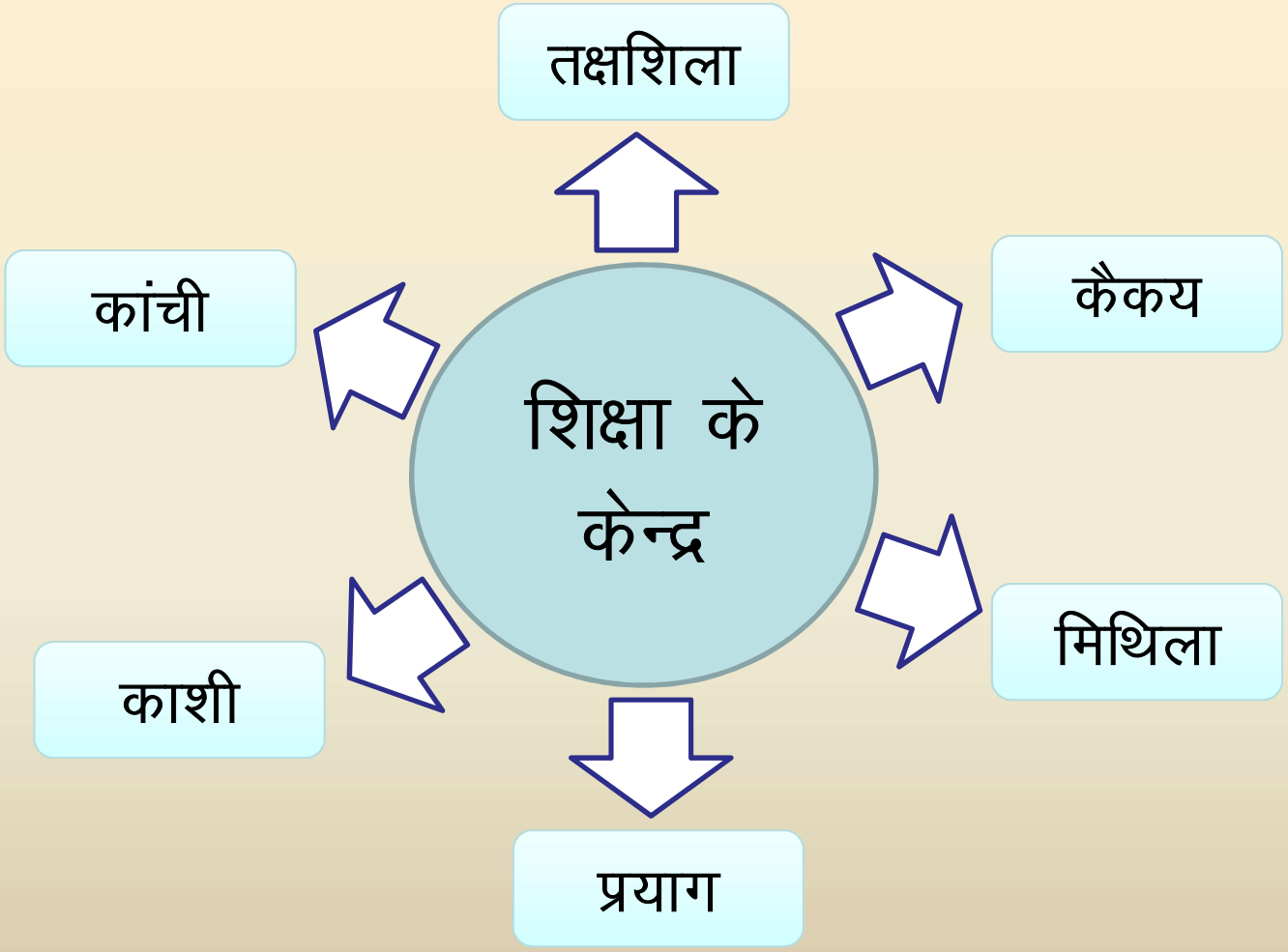

प्रमुख दोष

- लोकभाषाओं की उपेक्षा
- धर्म निरपेक्ष विषयों की उपेक्षा
- शूद्रो के शिक्षा की उपेक्षा
- जनसाधारण की शिक्षा की उपेक्षा
- स्त्री शिक्षा की उपेक्षा
- संसारिक जीवन की उपेक्षा
- धर्म का अत्यधिक महत्व
- आय के अनिश्चित स्रोत व भिक्षाटन
- रटने पर अधिक बल
- कठोर अनुशासन

आधुनिक शिक्षा के लिए ग्रहणीय तत्व

- आदर्श वादिता
- गुरू शिष्य सम्बन्ध
- शान्त वातारण
- अध्ययन के विषय
- शिक्षण विधि व शिक्षा सिदान्त
- छात्रो का सरल जीवन

डॉ महेश चन्द्र सिघल के शब्दो में–

सिद्धान्त रूप से हमें इतना तो मानना ही चाहिये कि आज भले हो सर मुड़ने, लंगोटी बॉधने तथा स्त्री जाति के सदस्यों के दर्शन मात्र से बचकर रहने की आवश्यकता नही है लेकिन सादा व संयमी जीवन नियमित दिन चर्या तथा दुर्व्यसनो से बचकर रहना वांछनीय है।

चयनित सन्दर्भ

1– अग्निहोत्री रविन्द (2006) : आधुनिक भारतीय शिक्षा की समस्याएँ व समाधान, जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

2– अग्रवाल जे0 सी0 (1993): लैण्डमार्कस इन द हिस्ट्री ऑव माडर्न इंडियन एजुकेशन, नयी दिल्ली, वाणी बुक्स।

3– अदावल एस0बी0 तथा उनियाल एम0 (1982) : भारतीय शिक्षा की समस्याएँ तथा प्रवृन्तियॉ, लखनऊ, उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

4– गुप्ता एस0पी0 तथा गुप्त अलका (2012) : भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास तथा समस्यायें, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।

5– लाल रमन बिहारी तथा शर्मा कृष्ण कान्त (2011) : भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्याएँ, मेरठ, आर0 लाल बुक डिपो मेरठ।

6– पाठक पी0डी0 (2003) : भारतीय शिक्षा व उसकी समस्याएँ, आगरा विनोद पुस्तक मंदिर।

धन्यवाद ।

fppt.com